Artistic Narration: *A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art* **ISSN (P): 0976-7444 (e): 2395-7247**
Vol. VIII. 2016 **IMPACT Factor - 3.9651**

तंत्र कला का आदि स्त्रोत : आदिम कला

डॉ0 साताक्षी चौधरी
प्रवक्ता–राजकीय कन्या इण्टर कालेज
अम्बेहटा पीर, सहारनपुर (उ0प्र0)

भारत में कला का इतिहास अति प्राचीन रहा है। पाषाण युग से ही आदि मानव गुफओं की दीवारों पर चित्रण करता चला आ रहा है। गुफओं से मिले अव"ोषों और साहित्यिक स्त्रोतों के आधार पर यह स्पष्ट हो चुका है कि भारत में कला की एक विद्या के रूप में 'चित्रकला' आदि काल से ही प्रचलित रही है। भारत में चित्रकला और कला का इतिहास मध्य प्रदे"ा की भीम बेटका गुफाओं की प्रागैतिहासिक काल की चट्टानों पर बने प"ाुओं के रेखांकन और चित्रांकन के नमूनों से प्रारम्भ होता है और भारत में तांत्रिक उपासना का प्रचलन भी आदिम काल से ही माना गया है। न केवल साहित्यिक स्त्रोतों से, अपितु प्रागैतिहासिक तथा ऐतिहासिक युगों की उपलब्ध पुरातत्व एवं कला सामग्री से भी तंत्र की प्राचीनता प्रमाणित होती है, क्योंकि आदिम गुफओं व चट्टानों की दीवारों पर उत्कीर्ण चित्रों में तांत्रिक प्रत्यय यथा–स्वास्तिक, चक्र, सूर्य, त्रि"ाूल आदि चित्रित मिलते है, जिससे ज्ञात होता है कि आदि मानव भी तंत्र सम्बन्धी क्रिया कलापों को जानता था तथा उसने उनका प्रतीकाक्तमक अंकन अपनी गुफाओं की भित्तियों पर किया क्योंकि तंत्र से प्रेरित कला के विभिन्न निर्माणों में जिस प्रतिमा"ाास्त्र की निजी वि"ोषता दिखायी देती है उसमें किन्हीं वि"ोष प्रतीकात्मक अभिव्यक्यिों का महत्व सबसे अधिक है अर्थात तंत्रकला का मूलभूत दृष्टिकोण और अभिव्यक्ति प्रतीकात्मक ही है, जिसका प्रयोग आदि मानव ने अपने चित्रों में किया है अर्थात उसने प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति दी है।

समस्त तांत्रिक कला का प्रत्येक उदाहरण प्रतीकों की एक माला उपस्थित करता है और ये कला प्रतीक न केवल विचारों को अभिव्यक्त करते है वरन् शोभा, आरक्षा एवं मांगलिक भावनाओं की संवृद्धि भी करते हैं। वस्तुतः इन्हीं प्रतीकों और लाक्षणिक मान्यताओं के कारण उन ि"ाल्पगत या चित्रित कृतियों को अन्य कला सामग्री से अलग पहचाना जा सकता है और ये तांत्रिक प्रतीक व चिन्ह है–स्वास्तिक, सूर्य, चन्द्र, वृक्ष, पद्म, कमल, पूर्णकुम्भ, सिंह, हस्ति, हिरण, अ"व, गुरूड़, नाग–नागिन, यक्ष–यक्षी, बज्र, स्तूप आदि प्राकृतिक एवं धार्मिक प्रतीक तथा मिथुन, लिंग–योनि, अष्टकोण, 'ाटभुज, त्रिकोण, वृत्त इत्यादि ज्यामितीय प्रतीक।[1] इनमें से अधिकतर प्रतीकों व चिन्हों का प्रयोग हमें प्रागैतिहासिक काल के चित्रों में चित्रित देखने को मिलता है। उस समय तंत्रवाद एक स"ाक्त धार्मिक आन्दोलन था जो कि आदिम जादू और उच्च विकसित आध्यात्मिक विचारों के सम्मिलन से निसृत हुआ। आदि मानव की जादू–टोने वाली भावना ने बलवती होकर इस परम्परा का रूप धारण कर लिया क्योंकि आदि मानव ने इसी भावना द्वारा अन्य वस्तुओं पर प्रभाव व नियंत्रण हासिल किया था और अपने शत्रुओं का अन्त किया था। वह रक्षा यंत्रों (ताबीज इत्यादि) व"ा में करने के उपायों, जन्तर–मन्तर और अन्नता प्राप्ति के लिये न"ाीली दवाओं के सेवन में निपुण थे। डॉ0 फ्राजर भी अनुकरणीय जादू के प्रभाव को वर्णित करते हुये कहते है कि ''सम्भवतः बहुत युगों से अपने शत्रु के पतन के लिये उसकी प्रतिमा का पतन करने के सिद्धान्त को व्यवहार में लाया जाता रहा होगा।''[2] इस प्रकार सिद्ध होता है कि जादूमय भावना मानव व्यवहार में प्रारम्भ से ही थी। इसी कारण आदि मानव ि"ाकार पर जाने से पूर्व ि"ाकार के चित्र, गुफाओं की भित्तियों पर अंकित किया करता था एवं

विभिन्न प्रकार के शारीरिक व्यायाम, आसन, मुद्राओं और तंत्र के न्यासों का प्रयोग किया करता था जो उसके तांत्रिक परम्परा के योगदान को द"र्ाते है। इस प्रकार ये शैल चित्र आदि मानवों में धर्म एवं उपासना के भी भाव परिलक्षित करते है। साथ ही यह भी बताते है कि प्रागैतिहासिक ि"ाला चित्र इतिहास में तांत्रिक प्रतीक व चिन्ह की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति का कद्ाचित सबसे प्राचीन रूप प्रस्तुत करते है।

ये शैल चित्र भारत में दक्षिण भारत के बेलारी, बाईनाड एडकल में, बिहार राज्यों में चक्रधरपुर, चिरांद, आन्ध्रप्रदे"ा में हलेपुर, पैयाम्पल्ली, बिल्लासरंगम और कुर्नल जिले के वेतमचर्ला कस्बे के निकट मुच्चातलाचिंतामनुगवी आदि, उत्तर प्रदे"ा में मिर्जापुर, हरनी हरना, विंध्य पर्वत की कैमूर श्रेणी, मानिकपुर, बांदा आदि, मध्य प्रदे"ा में रायगढ़, सिंहनपुर, भोपाल आदमगढ़, हो"ागाबाद, पहाडगढ़, कवरा पहाड़, मन्दसौर जिले के मौरी गांव में और नर्मदा घाटी, जो कि वि"व के सबसे प्राचीन घाटी है में भीमबेटका, भेड़ाघाट आदि में कई स्थानों मिलते हैं। इसके अतिरिक्त वर्जाहोम, गुलफ्रल (क"मीर), मेहरगढ़ (पाकिस्तान) तथा दोजली हडिंग (असम) आदि स्थानों पर भी प्रागैतिहासिक गुफायें एवं चित्र प्राप्त होते है।

ये चित्र विषय, शैली तथा सामग्री की दृष्टि से उस समय के मानव जीवन के प्रतीक है। अस्तु ऐसा प्रतीत होता है कि प्रागैतिहासिक, चित्राकृतियाँ तत्कालीन मानव जीवन की जीवन्त कहानियाँ है, जिनके सूक्ष्म अवलोकन से हम उनके सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा प्रकृति शक्तियों के प्रति उनके वि"वासों का आकलन तथा ज्ञान प्राप्त कर सकते है अर्थात् ये चित्र आदि मानव के जीवन के क्रमिक विकास की कहानी कहते है। आदिम अवस्था में मानव प्रकृति के अचंल में रहता था। उसे जो कुछ भी अपने आस–पास मिला उसी का प्रयोग उसने चित्रों के संदर्भ में किया। उसने खनिज पदार्थ गेरू, रामरज कोयला, खडिया आदि को ही अपने रेखांकन एवं चित्रण का आधार बनाया और पत्थर की चट्टानों को अपना चित्रतल। इन चित्रों के निर्माण में आदि मानव की भावनायें लालसा, विषय की कहानी, भय जादू टोना व धर्म आदि अनेक प्ररेणायें रही है। इन शैलाश्रयी चित्रों में मानव जीवन की लीला के अनेक आयाम मुखरित हुये है जैसे – आखेट, प"ुपालन, सामूहिक नृत्य, युद्ध, नौका विहार, मधुसंचय, आमोद–प्रमोद के दृ"य एवं जादू–टोने की भावना से प्रेरित चित्रों में तंत्र द"र्ान में वर्णित प्रतीक व चिन्ह अंकित मिलते हैं। उदाहरण स्वरूप भीमबेटका में 10 हजार वर्ष पुराने एक चित्र में सूर्य, आका"ा, ि"ाकार करते आदिमानव और साथ–साथ हाथी, सांभर, हिरण, मोर, साँप और बाइसन (भैंसा) चित्रित है। यहाँ पर कई चित्रों में धार्मिक चिन्ह जैसे–वृक्ष पूजा, आका"ा में रथ और यक्ष आदि का चित्रण भी मिलता है।[3]

मध्य प्रदे"ा के रायगढ़ क्षेत्र में स्थित सिंघनपुर के ि"ालाश्रयों पर अंकित विविध प्रकार की प्रतीकात्मक आकृतियों में सूर्य का अंकन मिलता है, जिनमें निकलती रेखाओं से किरणें प्रदर्"ात की गयी है । अमरनाथ दत्त ने छः किरणें स्पष्ट और एक अस्पष्ट बतायी है। इस प्रकार सात की संख्या पूरी मानकर सूर्य की सप्त"मयी वैदिक कल्पना, जो तंत्र द"र्ान से प्रभावित थी का स्मरण इस प्रसंग में किया गया है।[4] वास्तव में, यह सूर्य रूप तांत्रिक विचारधारा का दिग्द"र्ान कराता है। यहीं से प्राप्त कुछ ि"ाला चित्रों पर स्वास्तिक चिन्ह पर आधारित ज्यामितीय आलेखन भी प्राप्त हुये है जिनके ऊपर अष्टदल कमल[5] का चित्रण भी मिलता है। स्वास्तिक मानव समाज में कल्याण का प्रतीक है । स्वास्तिक पूजा का चलन हमें आदिम लोक संस्कारों एवं शैल चित्रों में ही नहीं अपितु सिंधु घाटी की सीलों, जैन–बौद्ध तथा हिन्दु धर्म–प्रतीकों में आधुनिक समय में भी मिलता हैं । प्रागैतिहासिक शैल चित्रों

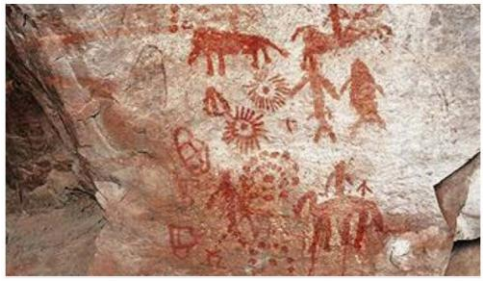
भीमबेटका से प्राप्त शैलचित्र

में स्वास्तिक के दोनों रूपों यथा–अबाहु (+) और सबाहु (H) का अंकन मिलता है । डॉ0 जगदी"ा गुप्त के अनुसार– पूर्ण या सबाहु स्वास्तिक (H) का विकास मूलतः अबाहु स्वास्तिक (+) से हुआ है, जो धन चिन्ह (+) और गुणन चिन्ह (x) दोनों रूपों में चित्रित किया जाता था।[6] 4 का अंक भी स्वास्तिक का प्रतीक रूप है।[7] अबाहु स्वास्तिक का अंकन रोंप में सागर, चम्बलघाटी और भोपाल क्षेत्र के ि"ालाचित्रों में आकल्पनात्मक और सबाहु स्वास्तिक का अंकन मिलता है।

स्वास्तिक के उक्त दोनों ही रूप पूजनीय माने जाते थे, इसका प्रमाण पंचमढ़ी क्षेत्र की बनियाबेरी नामक गुफा के भीतरी और बाहरी पूजा दृ"यों से क्रम"ाः मिलता है । स्वास्तिक पूजा की दृष्टि से यह गुफा अद्वितीय महत्व रखती हैं। बाहरी दृ"य

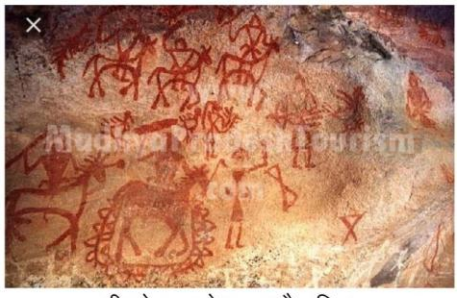

भीमबेटका से प्राप्त शैलचित्र

पूजा का अधिक आदिम और प्राचीनतर रूप व्यक्त करता है उसमें उपासक स्वास्तिक के दोनों ओर सहनर्तन की मुद्रा में प्रदर्ि'ात है। भीतरी दृ"य में उपासक सभी ओर से अत्यन्त विनम्र भाव से छत्र चढ़ाते हुये चित्रित है। पूजा प्रसंगों से भिन्न स्वतंत्र रीति से भी स्वास्तिक अनेक क्षेत्रों में ि'लांकित मिलता है। पंचमार्क मुद्राओं तथा बुद्ध चरणों में प्रतीक रूप से अबाहु–सबाहु दोनों प्रकार के स्वास्तिकों का अंकन मिलता है। पात्रों पर भी स्वास्तिक अंकित मिलता है।[8] शाहीटम्प, नवदाटोली, हस्तिनापुर, अहिच्छत्रा में ऐसे पात्र मिलते हैं । इन सबसे सिद्ध होता है कि ि'ला–चित्रों में स्वास्तिक का जो अंकन अनेक रूपों में अनेक प्रसंगों में हुआ है, वह एक सुविस्तृत परम्परा तंत्र से सम्बद्ध है और तंत्र प्रतीकों व चिन्हों में स्वास्तिक का स्थान विि'ाष्ट और महत्वपूर्ण है । स्वास्तिक न केवल ऊँ की तरह पवित्र और पूज्य माना जाता है वरन् वह उसका मूल रूप भी है।[9] त्रि"ाुल भी आबहु स्वास्तिक का ही परिवर्तित रूप है जिसका अंकन हमें मध्य प्रदे"ा के सिंघनपुर के ि'लाचित्रों से प्राप्त होता है।

ज्यामितीय आकार यथा–बिन्दु, रेखा, वृत्त, त्रिकोण, चतुष्कोण, 'ाटकोण आदि का तंत्र कला में वि"ोष महत्व है। इन ज्यामितीय आकारों द्वारा ही तंत्र कला में यंत्रों, मण्डलों, चक्रो आदि चित्रों की रचना हुई है। चक्र मूलतः ज्यामितीय वृत्त का द्योतक है, जिसका तंत्र द"र्ान में बड़ा महत्व है क्योंकि तांत्रिक प्रतीक व चिन्हों में वृत्त को ब्रह्माण्ड का प्रतीक रूप माना गया है। चक्र सांस्कृतिक दृष्टि से बौद्ध और वैष्णव मत में धार्मिक प्रतीक के रूप में वि"ोष सम्मान पाता रहा है तथा शाक्त मत में भी रहस्यमयता के साथ स्वीकृत हुआ है। भारतीय ि'ला चित्रों में इसका अंकन मुख्यतः निम्नलिखित दो रूपों में मिलता हैः–

प्रागैतिहासिक शैलचित्रों में प्रयुक्त ज्यामितीय आकृतियाँ

1– **<u>बाहर की ओर विकीर्ण होती हुई रेखाओं से युक्त वृत्त व वृत्त खण्ड</u>**– कबरापहाड़ में अरायुक्त चक्र अंकित मिलता है पर उसमें 30 से अधिक अरायें संयोजित है। ऐसा चक्र परवर्ती कला में सूर्य का रूप व्यक्त करता है। आकल्पनात्मक योजना में बाहरी अरायें त्रिकोणों के रूप में भी परिणत हो जाती है। एक चित्र में वृत्तों के भीतर एक–दूसरे को काटती रेखायें भी चित्रित है। वृत्त को आपूरित करने में बाह्य परिधि के समानान्तर अन्य वृत्तों का संयोजन भी मिलता है।

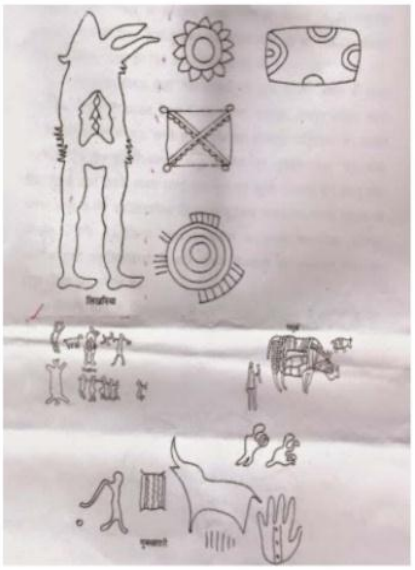

2– **<u>मध्यवर्ती केन्द्र–बिन्दु या लघु वत्त से युक्त वृत्त</u>**– बिन्दु को तो तंत्र द"र्ान में सृष्टि का प्रारम्भकर्ता माना गया है जिसका अंकन हमें प्रागैतिहासिक शैल चित्रों में अनेक रूपों में मिलता है। एक चित्र में एक साथ तीन चार रूप अंकित मिल जाते है जो परस्पर भिन्न है। एक चित्र में मध्यस्थ लघु वृत्त और बृहत् वृत्त की परिधियों के बीच का स्थान बिन्दुओं से आपूरित कर दिया गया है, दूसरे में समानान्तर रेखाओं द्वारा लघु वृत्त और बृहत् वृत्त की परिधियों को जोड़कर धन–चिन्हात्मक अबाहु स्वास्तिक का भी समावे"ा कर लिया गया है। एक अन्य चित्र में इन सबके साथ एक ओर परिधि बना दी गयी है। एक में स्वास्तिक न बनाकर लघु वृत्त को परिधि से जोड़ दिया गया है। रौप नामक स्थान में तथा अन्यत्र भी ब्राह्मी के साथ 'थ' अक्षर की तरह केवल केन्द्र–बिन्दु से युक्त वृत्त अंकित मिलता है और यह चक्र का बहुप्रचलित, सहज और अति संक्षिप्त रूप है।[13]

मध्य प्रदे"ा में मन्सौर जनपद के मोड़ी ग्राम के निकट तीस ऐसे शैल चित्राधार मिले हैं, जिनकी छतों और भित्तियों पर लाल गेरूए वर्ण के तांत्रिक प्रभाव वाले चित्र अंकित मिले है। यहाँ कुछ ज्यामितीय रेखाकृतियाँ भी प्राप्त हुई है, जो इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है जैसे–मण्डल के भीतर चतुर्भुजी स्वास्तिक, आठ अरो वाला चक्र, सूर्य, तिकोनिया घर, स्वास्तिक तथा स्वास्तिक की बेल में से निकला सर्वतोभद्र चिन्ह, अष्टदल कमल, जिसके भीतर चार जुड़ी हुई पीपल की पत्तियाँ दिखायी है, जो सिन्धु घाटी कला में भी दृष्टव्य है।[14] दक्षिण भारत का एक भाग वाडनाड एडकल में भी जादू–टोने अर्थात् तंत्र पर आधारित चित्राकृतियाँ मिली है। यहाँ के अव"ोषों में स्वास्तिक

चिन्ह, सूर्य, चतुष्कोण लाल व काले रंगों में चित्रित मिले हैं। इसके अतिरिक्त लिखनियाँ–2 की गुफा के एक चित्र में एक अद्भुत देवाकृति की परिकल्पना दिखती है। इसके प्रतीकात्मक रूप को देखकर देवत्व का आभास होता है। इसी क्रम में अन्य स्थल कण्डाकोट पहाड़ के पास बसौली ग्राम के निकट स्थित 'ढोकवा महारानी' में विचित्र एवं रहस्यमयी भाव की एक आकृति है, जिसके पैर उल्टी दि"ाा में अंकित है तथा हाथ वरद मुद्रा में अंकित है। रौंप नामक स्थान पर हमें चौक पूरने की अनुकृतियाँ भी मिलती है। इसी स्थान पर कई ज्यामितियाँ प्रतीक चिन्ह भी प्राप्त होते है, जिन्हें वृत्तों तथा आयत की सहायता से बनाया गया है।

इस समय के कलाकार की रेखाओं में जादुई भावनाओं के समस्त गुण विद्यमान थे। इनके अंकनों में एक अन्य गुण स्वाभाविकता से प्रतीकात्मकता की ओर गमन भी दृष्टिगोचर होता है और ये सभी ज्यामितीय रेखाकृतियाँ तत्कालीन मानवजीवन की धार्मिक, सांस्कृतिक वृत्तियों एवं तंत्र सम्बन्धी क्रिया–कलापों के प्रतीक चित्र है। इसी क्रम में मध्य प्रदे"ा की भीमबेठका की 600 गुफाओं के बृहद् ि"ालश्रयों पर तांत्रिक प्रतीक एवं चिन्हों से युक्त चित्राको"ा में रक्ताभ, पाण्डुर, नीलाभ, श्वेत, हरित और पीत वर्ण भी उसी आधार पर प्रयुक्त होते प्रतीत होते है। इन चित्रों की ज्यामितीय आकृतियाँ जैसे– डमरूनुमा, तीलीनुमा, मानवाकृतियाँ है, जो कि मध्यकाल की तांत्रिक कलाकृतियाँ में प्रचुर मात्रा में चित्रित मिलती है साथ ही जिन्हें आज हम आधुनिक युग में नव तांत्रिक कलाकारों– के0सी0एस0 पन्चिकर, जगदी"ा स्वामी नाथन, पी0टी0, रेड्डी, निरोद मजूमदार आदि की कलाकृतियों में भी चित्रित पाते है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूचीः–

1– *डॉ0–मिश्र, जनार्दन– भारतीय प्रतीक विद्या पृ0सं0–29*
2– डॉ0 फ्राजर–गोल्डन बौद्ध, भाग एक, पृ0सं0–10
3– चोपड़ा, सीमा–लेख दैनिक ट्रिब्यून से– चट्टान चित्रकला का सम्मोहक संसार
4– डॉ0 गुप्त, जगदी"ा– प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला, पृ0सं0–443
5– वाजपेयी, के0डी0–पेन्टिग एज ऐ सोर्स ऑफ इण्डियन हिस्ट्री, मध्यप्रदे"ा इतिहास परिषद पत्रिका सं0–6119681 पृ0सं0–47
6– डॉ0 गुप्त, जगदी"ा– प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला, पृ0सं0–418
7– डॉ0 त्रिवेदी, गोपाल चंद्र मधुकर– भारतीय चित्रकलाः एतिहासिक सन्दर्भ। पृ0सं0–37
8– डॉ0–मिश्र, जनार्दन– भारतीय प्रतीक विद्या पृ0सं0–463
9– डॉ0 गुप्त, जगदी"ा– प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला, पृ0सं0–420
10– मधुकर, गोपाल– भारतीय चित्रकला, पृ0सं0–111
11– बर्डउर्ड, जॉर्ज– सिम्बोलिज्म आव द ईस्ट एण्ड वेस्ट, भूमिका पृ0सं0–19
12– डॉ0 गुप्त, जगदी"ा– प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला, पृ0सं0–414–416
13– डॉ0 गुप्त, जगदी"ा– प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला, पृ0सं0–439
14– गैरोला, वाचस्पति– इण्डियन आर्किमोलॉजी, पृ0सं0–27
15– डॉ0 मावड़ी, एम0एस0– भारत की प्रमुख चित्रषैलियॉ, पृ0सं0–03